# माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 2 अप्रैल 2016 को डी0ए0वी0 महाविद्यालय, सेक्टर–10, चण्डीगढ के दीक्षांत समारोह में दिया गया भाषण।

Vice President of DAV managing committee Justice (retired) Sh. Amarjeet Choudary Ji, First citizen of Chandigarh City Mayor Sh. Arun Sood Ji, Principal of DAV College Dr. B.C. Joshan Ji, Advisor to the President DAV managing committee Sh. H.R. Gandhar Ji, Registrar of the college Dr. B.K. Sharma Ji, Faculty members, Guardians, Principal of the MCM DAV college for women Dr. Sangeeta Bhardwaj Ji और इस अवसर पर lower house में व upper house में उपस्थित सभी प्रिय विद्याथियो, भाईयो और बहनो!

यहाँ पर अभी जो H.R. Gandhar महोदय का उद्‌बोधन आपने सुना इससे अच्छा convocation address नहीं हो सकता। उन्होंने इस कॉलेज की विशेषता और साथ ही जो DAV Movement है, उसके बारे में बताया है। कुछ Movement ऐसे होते हैं जो प्रारंभ होते हैं और समाप्त हो जाते हैं, देश को कुछ दे नहीं पाते। लेकिन DAV Movement एक ऐसा Movement है जिसने देश को सब कुछ दिया है। इसने जो कुछ दिया है उसको अगर आप माइनस कर दें, उसे निकाल दें तो देश तो बचेगा, इसकी भूमि भी बचेगी, इसका नाम भी बचेगा, लेकिन जो देश की पहचान है वह समाप्त हो जाएगी। देश की पहचान को DAV Movement ने पुनर्जीवित किया है। आप सब सौभाग्यशाली हैं कि ऐसे DAV College में आपको पढ़ने का, संस्कार प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

जब प्राचार्य महोदय ने घोषणा की कि आज 1600 विद्यार्थियों को उपाधि दी जानी है तो मेरे मन में तुरंत एक विचार आया कि स्वामी विवेकानंद जी ने एक बार घोषणा की थी कि अगर मुझे देश में मेरे जैसे 100 लोग मिल जाएँ तो मैं देश का नक्शा बदल दूँ। तो उन 100 की तुलना मैं इन 1600 से कर रहा था। यहाँ तो 100 नहीं 16 गुना हैं, 1600 हैं। जब मैं आप सबको देख रहा था तो मुझे सर इकबाल की वे पंक्तियाँ याद आईं जो उन्होंने इस तरह से कही हैं–

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा।

हम बुलबुले हैं इसके ये गुलिस्तां हमारा।।

मुझे तो पूरे हॉल में बैठे हुए सबको देखकर ऐसा लग रहा है जैसे यह हमारा गुलिस्तां है और हम सब उसके बुलबुले हैं।

मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।

हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा।।

ये जो भाव प्रकट होते हैं स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने इन्हीं की नींव देश के अंदर रखी। देश का जो अद्यःपतन हुआ है, देश को जो हम भूले हैं, हमारा जो स्वाभिमान समाप्त़ हुआ है, हमारी जो पहचान समाप्त हुई है, हम इस देश का निवासी होने का स्वाभिमान नहीं रखते, गर्व नहीं रखते उसका अगर कोई कारण है तो देश की शिक्षा है। कहीं पर भी पृथ्वी पर जन्म लेना पर्याप्त नहीं है। लेकिन जहाँ पर आप जन्म लेते हैं उस देश का स्वाभिमान, उस राष्ट्र के प्रति आस्था, उस राष्ट्र की पहचान, उस राष्ट्र की संस्कृति, इसको समझना और उसके अनुसार अपना जीवन चलाना, वैसा व्यक्तित्व खड़ा करना यह भाव जब तक मन में नहीं आता, यह स्वाभिमान जब तक मन में नहीं जगता है तब तक जन्म लेना पर्याप्त नहीं है। ये सारी की सारी चीजें सिखाने का काम उस देश की education करती है, उस देश की शिक्षा करती है।

एक हजार वर्षों तक अपने देश पर दूसरों का शासन रहा, हम गुलाम रहे। बाहर से आकर लोगों ने हमारे ऊपर तलवार के बल पर शासन किया। भारतवर्ष को मिटाने के लिए जो हो सकता था वे सारे के सारे प्रयास उन्होंने किए। कई बार तो हमारे देशवासियों की हमारे देश के प्रति अश्रद्धा होने लगी। विदेशों में हम इसकी कोई अच्छी छवि नहीं बना पाए। इन सबके पीछे कोई कारण है तो वह है देश की शिक्षा–पद्धति।

लॉर्ड मैकाले ने 1834 में अंग्रेजी शासन में देश की शिक्षा–पद्धति को बदला। देश की शिक्षा–पद्धति को बदलकर उसने कहा कि मैं इस देश में ऐसी शिक्षा–पद्धति लाऊँगा, बच्चों को विद्यालयों में ऐसे संस्कार दिलवाऊँगा कि वे देखने में तो हिन्दुस्तानी लगेंगे लेकिन उनका मन और मस्तिष्क पूरा पाश्चात्य से भरा होगा, वे पूरे के पूरे विदेशी होंगे। और ऐसी शिक्षा–पद्धति लाने में वह सफल हो गया। इसके बाद धीरे–धीरे हम अपने देश का स्वाभिमान, देश की संस्कृति यहाँ तक कि अपने देश का चरित्र भूल गए।

देश स्वतंत्र होने के बाद 1947 में सबसे पहले शिक्षा के लिए राष्ट्रीय आयोग बना जिसकी अध्यक्षता डा0 राधाकृष्णन ने की। वे बाद में हमारे राष्ट्रपति बने। प्रारंभ में वे भी एक टीचर थे। वे उस आयोग के अध्यक्ष बने। देश स्वतंत्र होते ही हम सबका ध्यान इस बात की ओर गया कि देश की शिक्षा–पद्धति में परिवर्तन करना चाहिए। लेकिन आयोग तो बना, बाद में और भी आयोग बने। परन्तु उनके अनुसार देश की शिक्षा–पद्धति में परिवर्तन नहीं हुआ, वैसे उदाहरण, वैसे विद्यालय, वैसे महाविद्यालय हमें देखने को नहीं मिले। इस तरह के स्वाभिमान को जगाने वाले अध्यापक, प्राध्यापक हमें नहीं मिले। इसलिए केवल सिद्धांत के रूप में आयोग बनाकर, कोई कागज का मसौदा बनाकर पेश कर देने से काम नहीं होता है, जब तक आप जमीन पर उसे कार्यान्वित करके वैसे लोग तैयार नहीं कर देते। इसलिए इसका जवाब DAV Movement है। लेकिन यह DAV Movement सिर्फ अपने देश के लिए सीमित नहीं है। हमारे अंदर किसी भी तरह की संकीर्णता नहीं है। यह विश्व के लिए कल्याणकारी है–कुण्वन्तो विश्वं आर्यम। हमारी तो घोषणा यह है कि हम पूरे विश्व को आर्य बनाएँगे। आर्य का मतलब होता है– श्रेष्ठ, the Ideal, Super, Perfect. पूरे विश्व में इस तरह का श्रेष्ठ मानव बनाएँगे।

जब आप गीत में DAV जय–जय कह रहे थे तो DAV का मतलब क्या है? पहले D का मतलब है–स्वामी दयानंद, A का मतलब है–एंग्लो और V का मतलब है– वैदिक। वैदिक का मतलब है– हमारी संस्कृति, पूर्व की संस्कृति। एंग्लो का मतलब है– पाश्चात्य संस्कृति। जैसे आप एंग्लो–इंडियन कहते हो। इंडिया का आदमी जब कहीं जाकर के बस जाता है तो एंग्लो–इंडियन कह देते हैं। तो एंग्लो और वैदिक, पूर्व और पाश्चात्य की संस्कृति की पहचान को मिला कर हम मानव को श्रेष्ठ बनाने का काम करेंगे। यह DAV का मतलब है।

इसलिए हमारी सोच में, हमारे विचारों में, हमारी शिक्षा में कहीं पर भी किसी तरह की संकीर्णता नहीं है, बहुत व्यापकता है। भारतवर्ष इसी व्यापकता के लिए जाना जाता है। मैं आपको याद दिलाऊँ कि 1893 में विश्व में कितना अनर्थ होने वाला था। 1893 में अमेरिका के शिकागो में विश्व का धर्म सम्मेलन आयोजित किया गया था, Parliament of World Religions. पूरे विश्व के अंदर जितने रिलीजन हैं उन सबके प्रतिनिधि बुलाकर उन्होंने debate की थी, उन्होंने सभा की थी। उसमें वे यह सिद्ध करना चाहते थे कि विश्व के अंदर जितने रिलीजन हैं उन सबमें Christianity is supreme, क्रिस्चन ही सर्वश्रेष्ठ हैं। अब एक रिलीजन अगर सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होता है तो दूसरे रिलीजन तो secondary हो जाते हैं। उनके प्रति निम्नता का भाव उठता है। उनके प्रति संकीर्णता का भाव उठता है। इससे कितना खून–खराबा हो सकता था? लेकिन पाश्चात्य जगत के अंदर तो रिलीजन को लेकर ही खून–खराबा हुआ। इसलिए तो वहाँ पर secular शब्द जन्म का हुआ, secular– पंथ निरपेक्ष। ऐसी व्यवस्था अगर आप करेंगे तो व्यापक होगी, सहिष्णु होगी, सबके लिए कल्याणकारी होगी। इसलिए पंथ की बात मत करो। यह पंथ के प्रति उदासीनता का भाव पाश्चात्य जगत में जगा तो इसलिए ही जगा कि रिलीजन के कारण वहाँ पर कितने कत्ले आम हुए।

इसलिए शिकागो में धर्मसभा में अगर यह सिद्ध हो जाता कि Christianity ही सर्वश्रेष्ठ है तो पता नहीं क्या होता। इतने बड़े अनर्थ को भारत के एक संन्यासी ने रोका। पूरे देश में घूमते समय जब उनको पता चला कि शिकागो में इतना बड़ा अनर्थ होने वाला है तो वे बिना अधिकृत वक्ता के यहां सबसे किराया इकट्ठा करके वहाँ पर पहुँचे। उनको किसी ने बुलाया नहीं था इसलिए कोई लेने भी नहीं आया। कहते हैं कि स्वामी विवेकानंद जी ने एक रात तो स्टेशन पर काठ के बने खोखे के अंदर काटी। वहाँ ठंड ज्यादा रहती है तो सिकुडते रहे, काँपते रहे। ऐसी स्थिति में स्वामी विवेकानंद जी वहाँ पहुँचे। लेकिन किसी भी तरह जब उन्हें बोलने का मौका मिला तो पूरे विश्व के जितने भी धर्म गुरू, धर्मों के representative वहाँ उपस्थित थे सबके गाल पर ऐसा तमाचा मारा कि सब के सब नतमस्तक हो गए। वे आश्चर्य से पूछने लगे कि यह संन्यासी कहाँ से आया है? यह किस देश से belong करता है?

स्वामी विवेकानंद ने सिर्फ एक ही बात कही थी कि यह जो आप रिलीजन की बात कर रहे हो, अपना–अपना रिलीजन सिद्ध करने की बात हो रही है, आप सब कुएँ के

मेंढक हो। आपने सिर्फ कुआँ देखा है, विशाल सागर नहीं देखा। ये जितने भी रिलीजन हैं वे सब के सब एक ही तरफ जाते हैं। सबको अपनाइए। और उन्होंने वहाँ पर यह घोषणा की कि I am coming from a country where all religions are equal and all religions are acceptable. You can follow any religion. You will go to the same goal, the same Almighty, परमात्मा। इस तरह की घोषणा करने वाले स्वामी विवेकानंद जी ने भी इसी बात को प्रतिपादित किया कि पूरे विश्व को कल्याणकारी बनाने की हमारी व्यवस्था सबसे अच्छी है।

आप तो सब कितने भाग्यशाली हैं कि ऐसी संस्था के अंदर आपने शिक्षा प्राप्त की है। गांधार जी जब पहले स्कूल में पढ़ने वालों के नाम गिना रहे थे तो आप सबको नाम सुनकर, वैसे आपको पहले से भी पता होंगे, आपका मस्तक कितना ऊँचा हो गया होगा कि हम कितने अच्छे महाविद्यालय में पढ़ने के लिए आए हैं। यहाँ के पढ़ने वाले विद्यार्थी तो हर एक क्षेत्र में गए हैं। वे फिल्मी दुनिया में भी गए हैं। स्पोटर्स में तो कमाल किया है। सेना में जाकर उन्होंने कितने बलिदान दिए हैं। कारगिल का युद्ध, अभी–अभी जब मैं आया, मैंने श्रद्धांजलि दी तो मस्तक बहुत ऊँचा हो गया। इसलिए आप बहुत भाग्यशाली हैं कि इस तरह की संस्था के अंदर आपने शिक्षा प्राप्त की है।

लेकिन अगर यह चीज आपके पीछे रह गई कि आपने कहाँ पर पढ़ाई की है? आपको किसने पढ़ाया है? आपने कैसे संस्कार प्राप्त किए? वह चीज अगर हमारे अपने जीवन में नहीं आती तो फिर इस महाविद्यालय में पढ़ने का कोई मतलब नहीं है। यह हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम उस चीज को पकडें। यह चीज अगर हम पकड़ेंगे तो उसी के आधार पर हम अपने परिवार का नाम ऊँचा कर सकते हैं, अपने को आगे बढ़ा सकते हैं और देश के लिए burden की बजाय asset बन सकते हैं।

यहाँ पर सरस्वती की वंदना जब आप कर रहे थे तो वीणा वादिनी से आप क्या वर माँग रहे थे? वीणा वादिनी वर दे। उसमें पैसे की बात नहीं थी। उसमें भौतिकता की बात नहीं थी। उसमें संकीर्णता की बात नहीं थी। जग सिरमौर बनाएं भारत वह बल विक्रम दे। आप वह बल और विक्रम माँग रहे थे जिसके आधार पर भारत को सिरमौर बना सकें। इस महाविद्यालय की बहुत बड़ी परंपरा है। भारतवर्ष को सिरमौर बनाने के लिए जिन्होंने काम किया है आप उनकी अगुवाई कर रहे हैं, आप उस परंपरा के सदस्य हैं। साहस, शील हृदय में भर दे, जीवन त्याग, तपोमय कर दे। संयम, सत्य, स्नेह का भर दे। स्वाभिमान भर दे। इन गुणों को माँग रहे हैं आप।

आप समाज में विचरण करते हुए सबको देखते हैं, व्यापारियों को देखते हैं, नेताओं को देखते हैं, प्रशासनिक अधिकारियों को देखते हैं तो देखिए कि इन गुणों का समावेश उनके चरित्र में है या नहीं। इन गुणों का समावेश चरित्र में हो जाता है तो आप संकीर्णता से ऊपर उठेंगे। आप छोटे–मोटे झगडों से ऊपर उठेंगे। आज तो परिवार के अंदर कलह है। लोग आत्महत्या कर रहे हैं। यह इसलिए हो रहा है क्योंकि उनमें वे गुण नहीं हैं जो आप माँ सरस्वती जी से माँग रहे हैं। लव, कुश, ध्रुव प्रहलाद बनें हम।

कितना बड़ा संदेश दिया है, मानवता का। सीता–सावित्री दुर्गा माँ फिर घर–घर कर दे। ये कितनी बड़ी प्रेरणा हैं। इन सारी प्रेरणाओं को व्यक्ति के चरित्र में लाने के लिए ही यह DAV Movement है। यह शिक्षा–पद्धति है। इसको लेकर हम सबको आगे बढ़ना है।

आज आप सबको उपाधि प्राप्त होगी, आपको बहुत–बहुत शुभकामनाएँ। मैं जब मैडल बाँट रहा था तो मैंने गोल्ड मैडल भी बाँटे, सिल्वर मैडल भी बाँटें। लेकिन बेटियों ने तो कमाल ही कर दिया। वे गोल्ड भी ले गईं और सिल्वर भी ले गईं, कम से कम सिल्वर तो बेटों के लिए छोड़ देतीं। लेकिन चिंता की बात नहीं है। जब स्पोर्टस के प्राइज हमने दिए तो बेटे भी कमाल कर गए। मेरी बहुत बहुत शुभकामनाएँ। यह संस्था इसी तरह से अपने काम को आगे बढ़ाती रहे और इसी तरह नए–नए कीर्तिमान स्थापित करती रहे।

बहुत–बहुत धन्यवाद!